श्री कामेश्वर सिंह "असिस्टेंट प्रोफेसर"
विषय — राजनीति विज्ञान
वर्ग — बी॰ए॰ पार्ट – III 'प्रतिष्ठा'
पत्र — VI
यूनिट नं॰ — 17
दिनांक — 05-05-2020

अरस्तू का दासता सम्बन्धी सिद्धान्त :-
(Aristotles Theory of Slavery)

उत्तर → (Introduction) → ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की है। उसने दास और स्वामी के बीच विभेद नहीं किया है। इस धरती पर मनुष्य बालक के रूप में पैदा होता है। उसका विकास होता है और अंत में ब्रह्म में विलीन हो जाता है। दास प्रथा यूनानी समाज का अभिन्न अंग था। अरस्तु एक यथार्थवादी और वैज्ञानिक विचारक होने के नाते दासप्रथा पर प्रकाश डालना अपना कर्त्तव्य समझा। तात्कालीन यूनानी राज्यों पर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन दास प्रथा पर आधारित था। अरस्तू के पूर्व एल्सीडेमस (एल्सीडेमस) और एन्टीफेन जैसे सोफिस्ट विचारक दास प्रथा को चुनौती दे रहे थे। चारों तरफ से दासमुक्ति की करुण आवाज आ रही थी। यूनानी सभ्यता की नींव हिल रही थी, अरस्तु उसका जबाब देना अपना कर्त्तव्य समझता था।

दासता का अर्थ :> दासप्रथा तात्कालीन यूनानी जीवन का एक विशेष अंग था। यूनान के आर्थिक ढाँचे का यह एक महत्वपूर्ण आधार था। इसीलिए अरस्तु ने दास प्रथा का विशद विश्लेषण किया है। अरस्तु की मान्यता थी कि परिवार का एक आवश्यक अंग सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति दो प्रकार की होती है।

(i) निर्जीव और (ii) सजीव

निर्जीव सम्पत्ति का अर्थ है सोना, चाँदी, भूमि, मकान आदि। सजीव सम्पत्ति से तात्पर्य गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी, दास आदि से है। अरस्तु ने दास का अर्थ कारखाने या खेत में काम करने वाले मजदूरों से नहीं लगाया है। दास का कार्य मात्र घरेलू काम में सहायता देने तक सीमित है।

परिभाषा → दासता के विश्लेषण करने के पहले अरस्तु उसकी तीन परिभाषाओं से हमें परिचित कराते हैं। अरस्तु के अनुसार, "जो व्यक्ति अपनी प्रकृति से स्वयं अपना नहीं है, बल्कि दूसरे का है फिर भी मनुष्य होते वह स्वभावतः दास है।"

Scanned by CamScanner

दूसरे "वह मनुष्य जो मनुष्य होते हुए भी सम्पत्ति की वस्तु है और दूसरों के अधीन रहता है, दास है।" तीसरे "दास सम्पत्ति की वस्तु क्रिया के लिए बना उपकरण है और उसे उसके स्वामी से अलग किया जा सकता है।"

दासता के प्रकार :→ अरस्तु के अनुसार दास के दो प्रकार होते हैं —

(A) प्राकृतिक दास (B) कानूनी दास

(A) प्राकृतिक दास :→ अरस्तु के अनुसार 'प्राकृतिक दासता वह है जो स्वाभाविक रूप से मंद बुद्धि का है और अपना न होकर दूसरों का है। अरस्तु ने इसका समर्थन तीन आधारों पर किया है।

(i) प्राकृतिक असमानता :→ अरस्तु के अनुसार प्रकृति में असमानता है। आत्मा और शरीर, विवेक और तृष्णा, मनुष्य और पशु, स्त्री और पुरुष सभी प्रकृति से असमान हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति शासन करने के लिए उत्पन्न होते हैं ये बुद्धिमान होते हैं। और पूर्ण रूप से विकसित होते हैं। दूसरी ओर जो मूर्ख होते हैं और स्वभाव से अविकसित होते हैं। दास के रूप में शासित होने के लिए उत्पन्न होते हैं।

(ii) आत्मा का शरीर पर शासन :→ अरस्तु की दूसरी मान्यता है कि जीवधारी का निर्माण दो तत्वों से होता है। आत्मा और शरीर में आत्मा श्रेष्ठ होती है और शरीर निकृष्ट। आत्मा श्रेष्ठ होने से शरीर पर शासन करती है। अतः स्वामी का दास पर शासन करना सर्वथा उचित है।

(iii) स्वभाव के अनुकूल कार्य :→ अरस्तु का तीसरा तर्क यह है कि प्रत्येक वस्तु का अपने स्वभाव के अनुकूल विशिष्ट कार्य होता है। और उसी विशिष्ट कार्यों को करने में उसकी सार्थकता निहित रहती है। दास बलिशाली और मूर्ख होता है। उसके शरीर का गठन स्वामी से अलग होता है। वह शारीरिक कार्य कर सकता है परन्तु मानसिक नहीं। दूसरी ओर स्वामी को मानसिक कार्य करने के लिए अवकाश चाहिए और यह दास प्रथा के कारण ही संभव है।

दासता के पक्ष में तर्क :→ अरस्तु ने दास प्रथा को उचित करार करने के लिए निम्नलिखित तर्कों का सहारा लिया है।

(i) स्वामी के लिए आवश्यक :→ स्वामी के विवेक, बुद्धि और नैतिक मान्यताओं के विकास के लिए अवकाश आवश्यक होता है। दास स्वामी की सभी दैनिक आवश्यकताओं की

पूर्ति कर उन्हें अवकाश प्रदान करता है, जिससे स्वामी चिन्ताओं से मुक्त होकर मानसिक और आध्यात्मिक विकास करें।

(2) दास के लिए हितकारी :- दासता दास के लिए भी लाभप्रद होता है। दास विवेकशून्य होता है और उसमें क्षुधा की मात्रा अधिक होती है। जिस प्रकार क्षुधा को विवेक के अन्तर्गत रखना उचित होता है उसी प्रकार दास को स्वामी के अधीन होना चाहिए। दास पालतू जानवर के समान होते हैं। और जिस प्रकार जानवर स्वामी के यहाँ सुरक्षित होते हैं उसी प्रकार दास भी सुरक्षित रहते हैं।

(3) युग की आवश्यकता :- अरस्तु के समय में दास प्रथा पर ही सम्पूर्ण यूनानी आर्थिक व्यवस्था आधारित थी। उसी के आधार पर स्वामी अपना नैतिक और आध्यात्मिक विकास करता था। यथार्थवादी होने के कारण अरस्तु ने दास की उपयोगिता को युग की आवश्यकता के रूप में देखा है।

(4) सामाजिक शान्ति :- यह यूनानी राज्यों की शान्ति के लिए आवश्यक था। जब सोफिस्टों ने दासता के विरुद्ध आवाज उठाई तो समाज में अशान्ति फैल गई। अरस्तु ने उसे न्यायोचित ठहराकर समाज को बिखरने से बचा लिया।

(5) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था :- प्राचीन यूनान की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था दास पर आधारित थी। अरस्तु का मत है कि दास प्रथा के उन्मूलन से यूनानी अर्थव्यवस्था ही छिन्न-भिन्न हो जाती।

(6) राजनीतिक स्थिरता :- दास को यूनानी नागरिकता प्राप्त न थी, वे प्रशासन में भाग नहीं लेते थे यदि वे प्रशासन में भाग लेते तो उन्हें उनको उच्च पद मिल सकता था जिसके चलते उच्च तथा निम्न वर्ग में संघर्ष पैदा हो जाता। अरस्तु के अनुसार दास प्रथा के कारण ही यूनान की राजनीतिक स्थिरता एवं एकता सुरक्षित रही। क्योंकि शासन केवल उच्च वर्ग के हाथों में ही थी।

(7) व्यावहारिक आवश्यकता :- दास प्रथा का समर्थन अरस्तु ने व्यावहारिक आवश्यकता के आधार पर भी किया है। दास शारीरिक श्रम कर सकते हैं और स्वामी मानसिक श्रम। दोनों ही अपनी प्रकृति के अनुसार काम कर व्यावहारिक आवश्यकता की पूर्ति करते थे।

(8) सत्यता :- अरस्तु का मत है कि स्वामी और दास का विभाजन सत्य का प्रतीक है। प्रकृति ने सभी को समान नहीं बनाया है। कुछ ज्ञान के पिपासु होते हैं और दूसरे भौतिक आवश्यकता की पूर्ति का साधन। सत्यता के आधार पर पहला वर्ग स्वामी का है और दूसरा वर्ग दास का।

Scanned by CamScanner